



11116CH07

सप्तमः पाठः

सन्ततिप्रबोधनम्

प्रस्तुत पाठ महर्षि अरविन्द द्वारा संस्कृत में प्रणीत खण्डकाव्य 'भवानी भारती' से संकलित किया गया है। जीवन के प्रारम्भिक चरण में अरविन्द घोष महान क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रभक्त के रूप में उभरे। वह सशस्त्र क्रान्ति के समर्थक थे। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें अलीपुर बम केस का अपराधी मानकर 1906 ई. में अलीपुर कारागार में बन्दी बना दिया।

कारावास की इसी अवधि में एक रात स्वप्न में बन्दिनी भारतमाता का दर्शन कर, भावाविष्ट मनोदशा में कवि ने इस ओजस्वी तथा राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत शतककाव्य का प्रणयन किया। इस रचना में महाकवि अरविन्द ने भारतमाता को महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती के रूप में निरूपित किया है।

जीवन के उत्तरार्ध में महर्षि अरविन्द वेदों के व्याख्याता, महायोगी, महाकवि, परमराष्ट्रभक्त एवं महादार्शनिक के रूप में विश्वमञ्च पर प्रतिष्ठित हुए।

प्रस्तुत पाठ में भारतजननी परतन्त्रता एवं अज्ञानरूपी अन्धकार के बन्धनों में जकड़ी, अवमानना ग्रस्त अपनी सन्ततियों को उनके स्वर्णिम इतिहास का स्मरण कराते हुए, उन्हें प्रेरित करती है कि वे अपनी निद्रा का त्याग करें तथा अपने पराक्रम से राष्ट्र को पराधीनता के बन्धन से मुक्त कराएँ।

सान्द्रं तमिस्रावृतमार्तमन्धं

विलोक्य तद्भारतमार्यखण्डम्॥

गूढा रजन्यामरिभिर्विनष्टा

माता भृशं क्रन्दति भारतानाम्॥१॥

सनातनान्याह्वय भारतानां
कुलानि युद्धाय, जयोऽस्तु नो भीः।
भो जागृतास्मि क्व धनुः क्व खड्गः।
उत्तिष्ठतोत्तिष्ठत सुप्तसिंहाः॥२॥



माताऽस्मि भो! पुत्रक! भारतानां
सनातनानां त्रिदशप्रियाणाम्।
शक्तो न यान्पुत्र विधिर्विपक्षः
कालोऽपि नो नाशयितुं यमो वा॥३॥

ते ब्रह्मचर्येण विशुद्धवीर्याः
ज्ञानेन ते भीमतपोभिरार्याः।
सहस्रसूर्या इव भासुरास्ते
समृद्धिमत्यां शुशुभुर्धरित्र्याम्॥४॥

उत्तिष्ठ भो जागृहि सर्जयाग्नीन्
साक्षाद्धि तेजोऽसि परस्य शौरेः।
वक्षःस्थितेनैव सनातनेन
शत्रून्हुताशेन दहन्नटस्व॥5॥

अस्त्येव लोहं निशितश्च खड्गः
क्रूरा शतघ्नी नदतीह मत्ता।
कथं निरस्त्रोऽसि, मृतोऽसि शेषे
रक्ष स्वजातिं परहा भवाऽऽर्यः॥6॥

भो भो अवन्त्यो मगधाश्च बङ्गा
अङ्गाः कलिङ्गाः कुरुसिन्धवश्च।
भो दाक्षिणात्याः शृणुतान्श्चोलाः
शृण्वन्तु ये पञ्चनदेषु शूराः॥7॥

ये केचिदर्चन्ति ननु त्रिमूर्तिं
ये चैकमूर्तिं यवना मदीयाः।
माताऽऽह्वये वस्तनयान्हि सर्वान्
निद्रां विमुञ्चध्वमये शृणुध्वम्॥8॥

● शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च ●

| | | |
|--------------|---|---|
| सान्द्रम् | - | सघनम् (सह अन्द्रेण), सघन, गहन। |
| तमिस्रावृतम् | - | तिमिरावृतम्, तमिस्रेण आवृतम् (तु. तत्पु.), अन्धकार से ढका हुआ। |
| आर्तम् | - | पीडितम् दुःखी। |
| गूढा | - | निक्षिप्ता, छिपी हुई, डूबी हुई। |
| भृशम् | - | अत्यधिकम्, बहुत अधिक। |
| भीः | - | भयम्, डर। |
| नो अस्तु | - | न भवतु, न हो। |

| | |
|------------------|--|
| खड्गः | - असिः, तलवार। |
| पुत्रक! | - हे बालक (पुत्र + कन्), हे पुत्र। |
| त्रिदशप्रियाणाम् | - देवप्रियाणाम्, (तिस्रः दशाः येषां तेषां) देवताओं के प्रियों का। |
| विपक्षः | - शत्रुपक्षः (विरुद्धः पक्षः यस्य सः), शत्रुपक्ष। |
| विधिः | - शासनम् शासन। |
| विशुद्धवीर्याः | - परिष्कृतपराक्रमाः (विशुद्धं वीर्यं येषां ते), अत्यधिक पराक्रम वाले। |
| भीमतपोभिः | - घोरपरिश्रमैः, अत्यधिक परिश्रमों से। |
| आर्याः | - श्रेष्ठाः, श्रेष्ठ। |
| भासुरा | - भासमानाः (भास् + घुरच् प्रत्यय) दीप्तिमान्। |
| समृद्धिमत्याम् | - समृद्धियुक्त्याम् समृद्धि + मतुप् + डीप् स. ए. व., समृद्धिशाली पर। |
| शुशुभुः | - शोभायमानाः जाताः (शुभ् लिट् लकार); सुशोभित हुए। |
| शौरैः | - कृष्णस्य, शौरि ष. ए. व. (शूर + इञ्), कृष्ण के। |
| हुताशेन | - अग्निना, हुतं अश्नाति यः सः तेन, अग्नि के द्वारा। |
| सर्जय | - सर्जनं कुरु (सृज् लोट् लकार णिजन्त म. पु. ए. व.), उत्पन्न करो। |
| शतघ्नी | - तोपनामाख्यम् अस्त्रम् (शतं हन्ति या सा), तोप। |
| क्रूरा | - निष्ठुरा, निष्करुणा, भयंकर। |
| निशितः | - उद्दीप्तः (नि + शी + क्त), पैना किया गया। |
| परहा | - शत्रुघ्नः (परान् हन्ति), शत्रुओं को मारने वाला। |
| त्रिमूर्तिम् | - ब्रह्मविष्णुमहेशाख्यानं देवानाम् मूर्तिम् (त्रयाणां देवानां मूर्तिम्), त्रिदेवों की मूर्ति को। |
| एकमूर्तिम् | - एकेश्वरम्, एक निराकार परमेश्वर को। |
| वः | - तव, तुम्हारे। |
| आह्वये | - आकारयामि, पुकारती हूँ। |

❧ अभ्यास: ❧

1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्।

- (क) भारतानां माता कं विलोक्य भृशं क्रन्दति?
- (ख) रजन्यां गूढा माता कैः विनष्टा?
- (ग) के उत्तिष्ठन्तु?
- (घ) पुत्रक! केषां भारतानां माता अस्मि?
- (ङ) कः भारतपुत्रान् नाशयितुं शक्तः?
- (च) ते (शूराः) केन विशुद्धवीर्याः आसन्?
- (छ) त्वं परस्य शौरेः किम् असि?
- (ज) कविना कुत्रत्याः कुत्रत्याः शूराः आहूयन्ते?
- (झ) मदीया यवनाः कम् अर्चयन्ति?
- (ञ) सर्वान् तनयान् का आह्वयति?

2. हिन्दीभाषया आशयं लिखत।

- (क) गूढा रजन्यामरिभिर्विनष्टा माता भृशं क्रन्दति भारतानाम्।
- (ख) भो जागृतास्मि क्व धनुः क्व खड्गः उत्तिष्ठतोत्तिष्ठत सुप्तसिंहाः॥

3. रिक्तस्थानानि पूरयत।

- (क) भारतानां विनष्टा माता।
- (ख) भो पुत्रक! माताऽस्मि।
- (ग) भो! उत्तिष्ठ सर्जय।
- (घ) अहं माता आह्वये।
- (ङ) ये शृण्वन्तु।

4. अधोलिखितेषु विशेष्यविशेषणयोः समुचितं मेलनं कुरुत।

| विशेषणम् | विशेष्यम् |
|--------------------|-------------|
| (क) क्रूरा | कुलानि |
| (ख) विनष्टा | धरित्र्याम् |
| (ग) सनातनानि | खड्गः |
| (घ) समृद्धिमत्याम् | माता |
| (ङ) निशितः | तनयान् |
| (च) सर्वान् | शतघ्नी |

5. अधोलिखितानां पदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत।

उत्तिष्ठ, सर्जय, क्व, सुप्तसिंहा, माता, शत्रून्, रक्ष, बड्गाः, अर्चन्ति, आह्वये।

6. विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।

- (क) बालिका स्वपिति (रजनी, सप्तमीविभक्तिः, एकवचनम्)
 (ख) हे वीर! उत्तिष्ठ (युद्ध, चतुर्थीविभक्तिः, एकवचनम्)
 (ग) ते आर्याः जाताः। (तपस्, तृतीयाविभक्तिः, बहुवचनम्)
 (घ) माता पुत्रान् आह्वयति (सर्व, द्वितीयाविभक्तिः, बहुवचनम्)
 (ङ) शूराः वसन्ति। (पञ्चनद, सप्तमीविभक्तिः, बहुवचनम्)

7. अधोलिखितेषु यथास्थानं सन्धिं सन्धि-विच्छेदं वा कुरुत।

- (क) सनातनानि + आह्वय =
 (ख) जयोऽस्तु = +
 (ग) भासुराः + ते =
 (घ) शुशुभुर्धरित्र्याम् = +
 (ङ) जागृतास्मि = +
 (च) स्थितेन + एव =
 (छ) अस्ति + एव =

8. अधोलिखितस्य श्लोकस्य अन्वयं कुरुत।

माताऽस्मि भो! पुत्रक! भारतानां
 कुलानि युद्धाय जयोऽस्तु नो भीः।
 भो जागृतास्मि क्व धनुः क्व खड्गः
 उत्तिष्ठतोत्तिष्ठत सुप्तसिंहाः॥

9. अधोलिखितेषु अलङ्कारं निर्दिशत।

- (क) सहस्रसूर्या इव भासुरास्ते
 समृद्धिमत्यां शुशुभुर्धरित्र्याम्।
 (ख) भो भो अवन्त्यो मगधाश्च बड्गाः
 अङ्गाः कलिङ्गाः कुरुसिन्धवश्च॥

10. अधोलिखिते श्लोके प्रयुक्तस्य छन्दसः नाम लिखत।

ते ब्रह्मचर्येण विशुद्धवीर्याः

ज्ञानेन ते भीमतपोभिरार्याः।

सहस्रसूर्या इव भासुरास्ते

समृद्धिमत्यां शुशुभुर्धरित्र्याम्॥

● योग्यताविस्तारः ●

(क) अधोलिखितानां सूक्तीनां सन्ततिप्रबोधनम् इति पाठेन भावसाम्यम् अनुसन्धाय तुलना कार्या।

(क) उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

(ख) माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

(ग) शूरस्य मरणं तृणम्।

(घ) अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

(ख) महाभारते विदुरायाः सन्देशेन सन्ततिप्रबोधनस्य भावसाम्यं प्रतिपादयत।